प्रकाशन तिथि : 15 जनवरी, 2020
प्रेषण तिथि : 19 जनवरी 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 | अंक 21 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

'संविधान किसी वर्ग या व्यक्ति विशेष का नहीं, हम सबका'

तुम किसी से उद्वेग को प्राप्त न हो व तुम्हारे कारण किसी को उद्वेग न हो यह भगवान का आदेश है और संविधान भी ऐसी ही व्यवस्था है जो किसी वर्ग या व्यक्ति विशेष के लिए नहीं बल्कि हम सबके लिए बना है। यह सभी वर्गों के प्रतिनिधियों द्वारा बनाकर सबके द्वारा स्वीकृत किया हुआ है, इसलिए संविधान के प्रति भ्रांतियों को छोड़ें, उसे पढ़ें, स्वयं के दृष्टिकोण से पढ़े और उससे कोई असहमति है तो कानूनविदों से राय लेकर उसमें ही दिए साधनों द्वारा उसे ठीक करवाए। संविधान एक व्यवस्था है और हर देश ऐसी ही व्यवस्था से चलता है। तोड़-फोड़, हिंसा, अराजकता यह शैतानों का काम है, हमें शैतान नहीं इन्सान बनना है।

बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के द्वितीय स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का अर्थ बताते हुए कहा कि क्षात्र का अर्थ है क्षत्रिय का। पुरुषार्थ का अर्थ पुरुष (परमेश्वर) के लिए किया गया कार्य होता है और फाउंडेशन का अर्थ नींव होता है। इस प्रकार क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का अर्थ है क्षत्रिय के परमेश्वर के लिए किए जाने वाले कार्य की नींव डालना। अभी नींव ही डाली जा रही है, भवन बनना शेष है। क्षत्रिय का अर्थ कभी संकुचित नहीं होता, क्षत्रिय शब्द कर्तव्य पालन, दायित्व बोध का द्योतक है लेकिन युग के प्रभाव से रास्ता भटक गए। संघ पुनः दायित्व बोध करवा कर मार्ग पर ला रहा है और यह फाउण्डेशन उसी मार्ग का एक भाग है। उन्होंने कहा कि हम सबको परमेश्वर ने बनाया है, हम सब एक ही है और हमारे में दिखने वाली विभिन्नताएं उस परमेश्वर की सुंदर अभिव्यक्ति है। इसलिए जातियों को मिटाने की नहीं बल्कि जाति भेद को मिटाने का प्रयास करें।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

तीन राज्य, ग्यारह दिन और बारह शिविर

पिपलिया मंडी

समाज की युवा पीढ़ी को संस्कारित करके स्वधर्म पालन की राह पर आरूढ़ करने तथा समाज को एकता के सूत्र में बांधने के उद्देश्य से संघ के शिविरों की श्रृंखला अनवरत चल रही है। इसी क्रम में 21 से 31 दिसंबर की ग्यारह दिवसीय अवधि में श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारह प्रशिक्षण शिविर राजस्थान, गुजरात व मध्यप्रदेश राज्यों में विभिन्न स्थानों पर सम्पन्न हुए। इन शिविरों में दो सात दिवसीय शिविर तथा चार बालिका शिविर सम्मिलित हैं। जयपुर संभाग के उत्तर पूर्व जयपुर (ग्रामीण) प्रान्त के अंतर्गत एक सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सीकर जिले के महरोली गांव में 25 से 31 दिसम्बर तक सम्पन्न हुआ। शिविर में महरोली के अतिरिक्त गुढा कल्लां, मोहनवाडी, जुलियासर, बोबासर, बीलवाडी, आऊ, गुगडवार, खानपुर, आसरवा, किरडोली, रसाल, ठाकरियावास, बरनेल, बरवाली, मलारना, बाढ-मोचिंगपुरा, बामण्या, छापडा, मकराना, गोला, भैसावा, अवाय, राजगढ़, झाक, अकदडा, दवेला, देणोक, गींगाला आदि गांवों के 70 स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। शिविर का संचालन संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि अनुशासन के बिना जीवन को एक निश्चित दिशा नहीं दी जा सकती। अनुशासन से ही शरीर, मन व बुद्धि पर नियंत्रण स्थापित किया जा सकता है और जिसका स्वयं पर नियंत्रण होता है वही अन्यों को मार्ग दिखाने में सक्षम बनता है। इन सात दिनों में हम इसी अनुशासन और आत्मनियंत्रण का अभ्यास करेंगे। विदाई कार्यक्रम में गांव के समाजबंधु तथा महरोली बालिका शाखा की स्वयंसेविकाएं भी सम्मिलित हुई। इस अवसर पर शिविर संचालक ने शिविरार्थियों से कहा कि आप अब संघ परिवार का अंग हैं और इस परिवार के प्रति आपका दायित्व है कि आपके किसी भी कार्य से इस पर अंगुली न उठे। संघ कार्य के लिए हमें अनेकानेक आहुतियां देनी हैं। निष्ठापूर्वक समाज और राष्ट्र की सेवा के लिए तत्पर रहना है। संघ की आशाएं आप पर टिकी हैं। शिविर व्यवस्था का जिम्मा विशन सिंह व भागीरथ सिंह महरोली ने संभाला। इसी प्रकार बीकानेर संभाग के अंतर्गत नोखा प्रान्त के भादला गांव में भी बालकों का सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। 25-31 दिसम्बर की अवधि में आयोजित इस शिविर में भादला, मोरखाना, कोलायत, झंझेऊ, पुन्दलसर, श्री डूंगरगढ, नोखा, नागौर, पांचौडी, मेड़ता, बीकानेर, विजयनगर, फलोदी आदि स्थानों के 60 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन करते हुए खींवसिंह सुल्ताना ने शिविरार्थियों से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य ईश्वरीय कार्य है। पूज्य श्री तनसिंह जी ने कहा है कि उद्देश्य जितना महान होता है मार्ग उतना ही कठिन होता है। इसीलिये संघ की साधना कष्टप्रद है। ईश्वर ने हमें जिस परिवार, कुल, समाज में जन्म दिया है उसी के अनुरूप हमारा स्वभाव होता है और उसी के अनुसार समस्त प्रकृति के प्रति हमारा उत्तरदायित्व निर्धारित होता है। ईश्वर प्रदत्त इस उत्तरदायित्व को निभाते हुए ही हमारे पूर्वजों ने त्याग और बलिदान की क्षात्र परम्परा का निर्माण किया। संघ उसी परम्परा को पुनर्जीवित करने का वैज्ञानिक पद्धति है। भादला गांव के धन्ने सिंह, जसपाल सिंह, राजूसिंह, मनोहर सिंह, भैरूसिंह, तेजसिंह, राम सिंह, राजेन्द्र सिंह तथा जोगेन्द्र सिंह ने व्यवस्था में सहयोग किया। 30 दिसंबर को ग्रामवासियों हेतु शिविर दर्शन का कार्यक्रम रखा गया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

किसी व्यक्ति के एक मित्र राजनीति में किसी बड़े पद पर पहुंच गए। उन व्यक्ति ने अपने साथियों को बताया कि अमुक पद पर पहुंचे वे व्यक्ति उनके मित्र हैं। साथियों ने कहा कि मित्र थे, हैं नहीं। अब आपकी वह मित्रता भूतकाल का विषय हो गई। वे व्यक्ति उस दिन तो स्वीकार नहीं कर पाए लेकिन कालांतर में उनका वह वार्तालाप सच हो गया। यह सामान्य सी बात है। सामान्य जीवन व्यवहार है कि लोग जब कुछ विशिष्ट स्थान पर पहुंचते हैं तो अपने नए-नए संबंधों के बीच पुराने संबंधों को भूल जाते हैं। पद की विशिष्टता उन पर हावी हो ही जाती है लेकिन महापुरुष तो सम होते हैं। उनकी महानता किसी पद या परिस्थिति की मोहताज नहीं होती और उनकी वह नैसर्गिक महानता अपने आपको सामान्य बनाकर पेश करती है ताकि सामान्य से सामान्य व्यक्ति उनकी उस महानता से लाभान्वित हो सके। उनका यह सामान्य बना रहना कोई बनावट नहीं बल्कि नैसर्गिक होता है इसलिए स्वभावतः प्रकट होता रहता है। पूज्य तनसिंह जी का महापुरुषत्व उनकी सामान्यता में समाहित था। उनका तो शिक्षण ही यह था कि किसी भी प्रकार की असाधारणता जब तक सामान्य लोगों की साधारणता नहीं बन जाती तब तक उसका उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। उनका यह शिक्षण उनके जीवन के प्रत्येक व्यवहार में परिलक्षित होता था। 1959 में हल्दीघाटी उ.प्र.शि. की घटना है जब पूज्य श्री राजस्थान विधानसभा में दूसरी बार विधायक थे। शिविर खुले में था। पेड़ों के नीचे सभी शिविरार्थी रहते थे। एक रात तेज तूफान एवं उसके बाद मूसलाधार बारिश हुई। सभी शिविरार्थी अपने कपड़े आदि सामान पेड़ों के तनों में रखकर चारों तरफ बैठ गए। पूज्य श्री भी शिविर कार्यालय का सामान अपनी जीप आर.जे.सी. 116 के नीचे रख ओट लेकर बैठ गए। इतने में एक बरसाती नाले का पानी जीप के नीचे से बहता हुआ कार्यालय के सभी कागजात एवं सामान को गिला कर गया। सुबह तक सब कुछ भीग चुका था। प्रातःकालीन प्रार्थना के बाद सभी पहाड़ी पर चढ़ गए एवं सहगायनों की धुन में नाचने लगे। रात के तूफान और मूसलाधार बारिश को जैसे सभी भूल चुके थे। पूज्य तनसिंह जी सबके बीच हाथ में एक लकड़ी लिए नाच रहे थे। अपनों के बीच अपने आपको जो भूल जाता है वहीं परायों को अपना बना लेता है। राजस्थान विधानसभा में दूसरी बार के विधायक बच्चों के बीच नाच रहे थे और अपने साथ शिविर कर रहे सामान्य शिविरार्थियों को विशिष्ट बनाने में संलग्न थे स्वयं की विशिष्टता को वितरित कर।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

CLAT (संयुक्त विधि प्रवेश परीक्षा)

इस परीक्षा का पूरा नाम 'कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट' है। यह परीक्षा देश के 19 राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों (National Law University) में 5 वर्षीय एकीकृत विधि पाठ्यक्रम में प्रवेश प्रदान करने हेतु आयोजित की जाती है। यह परीक्षा प्रतिवर्ष मई माह में आयोजित होती है तथा इसका आयोजन उपरोक्त 19 राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों द्वारा बारी-बारी से किया जाता है। राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त देश के अनेक निजी विधि विश्वविद्यालयों द्वारा भी CLAT परीक्षा के प्राप्तांको के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। अतः विधि(कानून) के क्षेत्र में कैरियर बनाने हेतु CLAT परीक्षा अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

योग्यता:- CLAT परीक्षा में बैठने के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता 12वीं कक्षा उत्तीर्ण है। 12वीं कक्षा में न्यूनतम 45% प्राप्तांक (सामान्य वर्ग के अभ्यर्थी हेतु) आवश्यक है। CLAT परीक्षा हेतु आयुसीमा का कोई बंधन नहीं है। 12वीं कक्षा की परीक्षा दे रहे अभ्यर्थी भी CLAT परीक्षा में भाग ले सकते हैं, परन्तु सफल होने पर विश्वविद्यालय में प्रवेश के समय उन्हें न्यूनतम प्राप्तांको के साथ 12वीं परीक्षा उत्तीर्ण का प्रमाण प्रस्तुत करना होगा।

CLAT परीक्षा हेतु ऑनलाइन आवेदन करना होता है। सामान्य वर्ग के अभ्यर्थी हेतु आवेदन शुल्क 4000 रुपये हैं। परीक्षा कंप्यूटर आधारित (ऑनलाइन) अथवा ऑफलाइन तरीके से आयोजित होती है जो परीक्षा आयोजित करने वाले विश्वविद्यालय पर निर्भर करता है। वर्तमान में इस परीक्षा की अवधि 2 घंटे है, जिसमें अभ्यर्थी को 150 बहुवैकल्पिक प्रश्नों का उत्तर देना होता है। प्रत्येक सही उत्तर के लिए 1 अंक मिलता है तथा गलत उत्तर के लिए .25 अंक की कटौती होती है। परीक्षा का माध्यम पूर्णतः अंग्रेजी होता है तथा इसमें अंग्रेजी, विधिक अभिरुचि, तर्कशक्ति, गणित तथा सामान्य ज्ञान से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं। विधि विश्विद्यालयों के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में भी CLAT परीक्षा द्वारा ही प्रवेश मिलता है। स्नातकोत्तर में प्रवेश हेतु परीक्षा में 100 बहुवैकल्पिक प्रश्नों के साथ 25-25 अंको के 2 वर्णनात्मक प्रश्न भी पूछे जाते हैं।

क्रमशः

(पृष्ठ एक का शेष)

संविधान किसी...

ऊंचे और नीचे के भाव को मिटाने का प्रयास करें। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि सभी ग्रन्थों का एक ही संदेश है, ईश्वर की ओर बढ़ना। यही एक काम शांति एवं सुख देने वाला है शेष सब थका देने वाले हैं, तनाव पैदा करने वाले हैं। इसलिए इसी ओर बढ़ने का प्रयास करें और यही पुरुषार्थ है। उन्होंने कहा कि व्यवस्था में दोष हो सकते हैं, उसका विरोध भी होना चाहिए लेकिन विरोध व्यवस्था के तहत ही किया जाना चाहिए। संघ किसी के विरुद्ध नहीं है, संघ सिर्फ बुराई के विरुद्ध है और बुराई बेटे या भाई में भी हो तो उसका विरोध किया जाना चाहिए लेकिन उसका प्रकटीकरण व्यवस्थागत साधनों से ही होना चाहिए। उद्बोधन से पूर्व माननीय संघ प्रमुख ने समारोह में आए अन्य समाजों के लोगों को श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन का प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया। टीम बाड़मेर के सहयोगी महेन्द्रसिंह तारातरा ने विगत वर्ष का प्रतिवेदन एवं द्वितीय वर्ष की कार्य योजना बताई। सह संयोजक आजादसिंह ने फाउंडेशन का परिचय प्रस्तुत किया। जयपुर में स्थापना दिवस माननीय महावीर सिंह सरवड़ी के सानिध्य में 'संघशक्ति' में मनाया गया। माननीय सरवड़ी ने इस अवसर पर अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि अच्छा काम करने वाले को ईश्वर मदद करता है इसलिए किसी प्रकार की चिंता न करें, समय कितना लगता है इसकी फिक्र न करें बल्कि हम जितना कर सकते हैं, करते जाएं ताकि आने वाली पीढ़ी को सपाट मार्ग मिल सके। जालोर में संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास के सानिध्य में स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन श्री क्षत्रिय युवक संघ के 73 वर्षों की साधना की एक अंगड़ाई है। धैर्य पूर्वक एक लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए एक नेता की आज्ञा में चलने वाला कार्य क्या परिणाम दे सकता है यह फाउण्डेशन के विगत एक वर्ष के कार्य से स्पष्ट होता है इसलिए हम सांघिक साधना पर अवरूढ़ होकर निरन्तर गतिशील बनें। झुंझुनूं में इस अवसर पर बैठक का आयोजन किया गया। फाउण्डेशन के संयोजक यशवर्धनसिंह ने इस अवसर पर भूमिका, उद्देश्य, कार्य प्रणाली को विस्तार से बताया एवं झुंझुनूं में किस प्रकार काम को गति दी जा सकती है इस पर चर्चा हुई। जालोर के भीनमाल, पाली जिले के सोजत सिटी, बीकानेर, सीकर, 'तनायन' जोधपुर, नागौर जिले के डीडवाना, मकराना, कुचामन सिटी, मेड़ता सिटी, खींवसर, नागौर, परबतसर, नोखा (बीकानेर), सुमेरपुर (पाली) आदि स्थानों पर भी फाउंडेशन का स्थापना दिवस मनाया गया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कुचामन

जयपुर

जालोर

संत समागम से सभा भवन का उद्घाटन

संघ से संबद्ध संस्था भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट द्वारा संचालित आलोक आश्रम में एक सभा भवन बना हुआ था। विगत दंपति शिविर में सभी को लगा कि एक सभा भवन और बनना चाहिए। चर्चा ही चर्चा में सबने अपना छोटा-छोटा सहयोग बताना प्रारंभ किया और उस छोटे-छोटे सहयोग का मूर्त रूप सभा भवन बनकर तैयार हो गया। 7 जनवरी को माननीय संघ प्रमुख श्री अपने प्रवास कार्यक्रम के तहत बाड़मेर पधारे। बाड़मेर के महाबार में स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी का आश्रम है और स्वामी जी के अनेक शिष्य वहां अपने साधनागत प्रवास के तहत पधारते रहते हैं। संघ प्रमुख श्री अपने प्रवास के दौरान वहां पधारते हैं। 8 जनवरी को संघ प्रमुख श्री भी वहां पधारे एवं संतों को आलोक आश्रम में आमंत्रित किया। सभी संतों के सानिध्य में नए सभा भवन

में संत समागम रखा गया। स्वामी जी के वरिष्ठ शिष्य अकेलानंद महाराज ने इस अवसर पर कहा कि मन की एकाग्रता के बिना ईश्वर पथ पर नहीं बढ़ा जा सकता एवं इंद्रियों को वश में किए बिना एकाग्रता संभव नहीं है। प्रारम्भ में यह कार्य अति कठिन लगता है लेकिन धीरे-धीरे अभ्यास से सहायता मिलती है एवं साधक आगे बढ़ता जाता है। माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपस्थित संतों को बताया कि संघ इसी मार्ग का व्यवहारिक प्रशिक्षण है। संघ अपने साथ आने वालों को अभ्यास एवं वैराग्य के मार्ग पर आरुढ़ करता है एवं जीवन लक्ष्य की ओर बढ़ाता है। नए सभा भवन में हुए इस संत समागम में संघ के स्थानीय स्वयंसेवकों को स्वामी जी के शिष्य लालदेव महाराज, सुखेश बाबा, गुलाब बाबा, रामस्नेही बाबा, जितेन्द्र बाबा, कमलेश बाबा, राम बाबा, बिलु बाबा आदि संतों का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ।

तिंवरी व बालेसर में तहसील स्तरीय बैठक

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की जोधपुर टीम की बैठक 30 दिसंबर को संघ के केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के सानिध्य में संपन्न हुई। बैठक में जोधपुर जिले में फाउंडेशन के कार्य को गति देने के लिए कार्य योजना बनाई गई है। उसी के अनुरूप 5 जनवरी को तिंवरी व बालेसर में तहसील स्तरीय बैठक रखी गई। दोनों ही बैठकों में स्थानीय समाज बंधु शामिल हुए एवं उनके साथ फाउंडेशन के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए बताया गया कि समाज की सकारात्मक युवा शक्ति को संयोजित कर उसका समाज हित में सदुपयोग करने के लिए फाउंडेशन कार्य कर रहा है एवं इसके लिए 6 उद्देश्य तय

किए गए हैं। दोनों ही बैठकों में केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने कहा कि संघ अपनी व्यक्ति निर्माण की अनूठी प्रणाली के साथ विगत 73 वर्षों से कार्यरत है। इसके लिए समाज की वंदना के लिए अनेक प्रकल्पों के माध्यम से कार्य करता है। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन ऐसा ही प्रकल्प है। हमें इससे जुड़कर संघ के अभियान में सहयोगी बनना चाहिए।

समूह यज्ञ, रक्तदान एवं रोग जांच शिविर

गुजरात के धंधुका क्षेत्र के यदुवंशी श्री चुड़ासमा राजपूत समाज द्वारा कुलदेवी खोडियार माता मंदिर गोरासु तहसील धोलेरा में 29 दिसम्बर को सामूहिक यज्ञ का आयोजन सुरेन्द्र नगर के आर्य गुरुकुल के आर्यबंधुजी के निर्देशन में संपन्न हुआ। इस अवसर पर संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा ने यज्ञ विषयक महत्व की जानकारी दी। इस अवसर पर यज्ञ के साथ रक्तदान एवं स्वास्थ्य संबंधी जांच शिविर का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में समाज के अध्यक्ष वीरमदेवसिंह चुड़समा आदीपुर की अध्यक्षता में 700 लोग उपस्थित रहे।

राजपूत विकास समिति पीसावास का सम्मेलन

राजपूत विकास समिति पीसावास लूणी (जोधपुर) का वार्षिक सम्मेलन व प्रतिभा सम्मान समारोह 30 दिसम्बर को आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में 10वीं व 12वीं में सर्वाधिक अंक लाने वाली प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। इस अवसर पर समारोह में होने वाले खर्च का दो प्रतिशत शिक्षा नेग के रूप में राजपूत शिक्षा कोष को देने की सहमति बनी। पूर्व सांसद नारायणसिंह माणकलाव ने इस अवसर पर सेवा, समर्पण, त्याग आदि गुणों को राजपूत समाज की मिशाल बताया एवं इसी कारण राजपूत समाज को अन्य समाजो के लिए मार्गदर्शक बताया। सम्मेलन की अध्यक्षता हनुमानसिंह खांगटा ने की।

गिरी सुमेल बलिदान दिवस मनाया

शेरशाह सुरी से अपनी धरती के प्रति दायित्व भाव के कारण संघर्ष कर बलिदान होने वाले वीरों की स्मृति में 38वां गिरि सुमेल स्मृति दिवस 5 जनवरी को पाली जिले के बर के निकट स्थित बलिदान स्थल पर श्रद्धापूर्वक। राजस्थान सरकार के परिवहन मंत्री प्रतापसिंह खाचरियावास, पूर्व मंत्री पुष्पेन्द्रसिंह राणावत, विधायक खुशवीरसिंह, बीज निगम के पूर्व अध्यक्ष धर्मेन्द्रसिंह राठौड़, पूर्व सांसद गोपालसिंह ईडवा, विधायक अविनाश गहलोत के आतिथ्य में मनाया गया। इस अवसर पर वक्ताओं ने जेता और कूंपा के नेतृत्व में शेरशाह सूरी की 80,000 की सेना से मात्र 8000 साथियों के साथ लड़कर बलिदान होने वाले सभी जातियों के वीरों का स्मरण करते हुए उनके बलिदान से प्रेरणा लेने की बात कही।

मृत्यु भोज बंद करने का निर्णय

धमोरा गांव में विगत 27 दिसम्बर को श्रीमती गेन कंवर पत्नी स्व. हुकमसिंह के देहावसान पर उनके दाह संस्कार के बाद शमसान भूमि में ही समाज के लोगों ने संबंधित परिवार की सहमति से वर्ष 2020 से मृत्युभोज बंद करने का निर्णय लिया। युवा लोगों की अगुवाई में हुए इस निर्णय को सभी ने स्वीकारा एवं वर्ष 2020 से किसी भी परिवार में मृत्यु भोज न करने का संकल्प लिया।

मोटा (पालनपुर) में स्नेहमिलन

बनासकांठा प्रांत की पालनपुर तहसील के मोटा गांव में 12 जनवरी को स्नेहमिलन आयोजित किया गया। रामसिंह धोता ने इसमें संघ का परिचय प्रस्तुत किया वहीं जसवंतसिंह मेजरपुरा ने संघ कार्य का महत्व बताया। लंबे समय से संघ कार्य में सहयोगी हमीरसिंह मोटा ने पालनपुर व वड़गाम क्षेत्र में विगत में हुए शिविरों व संपर्क यात्राओं के अनुभव साझा किए। अजीतसिंह कुणघेर ने उपस्थित लोगों से संघ कार्य में सहयोगी बनने का आह्वान किया। आगामी 25 जनवरी को पूज्य तनसिंह जी की जयंती को लेकर कार्य योजना बनाई गई।

20वां पारिवारिक स्नेहमिलन संपन्न

महाराज मुकटसिंह शेखावत संस्थान मौरना बिजनोर व संस्थान की दिल्ली एन.सी.आर. इकाई राजपूताना क्षत्रिय संघ दिल्ली के तत्वावधान में वीर कुंवरसिंह भवन इन्द्र एंक्लेव की कार्य सेवा व 20वां पारिवारिक स्नेहमिलन 29 दिसम्बर 2019 को इन्द्र एंक्लेव नांगलोई में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में सैंकड़ों क्षत्रिय बंधु सपरिवार शामिल हुए एवं कार्य सेवा में पूजित ईंट समर्पित की। कार्यक्रम में संस्थान की पत्रिका का विमोचन किया गया। मेधावी विद्यार्थियों, स्वरोजगारी बंधुओं एवं वाल्मिकी रामायण का अध्ययन करने वाली वीरांगना संघ की टीम को पुरस्कृत किया गया। डॉ. परमेन्द्र चौहान ने इस अवसर पर कार्य सेवा के महत्व के बारे में बताया। स्नेहमिलन में विवाह योग्य युवक-युवतियों का रजिस्ट्रेशन करवाया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक डॉ. मनोहरसिंह किनसरिया ने संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली के बारे में विस्तार से जानकारी दी एवं संघ शिक्षण का महत्व समझाया।

संपादकीय

'सिर कटाना और सिर गिनाना'

15 दिसम्बर को संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में कायमखानी समाज के प्रतिनिधियों के साथ आयोजित सद्भावना बैठक में माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा 'लोग कहते हैं कि आज का जमाना सिर कटाने का नहीं सिर गिनाने का है, लेकिन मेरा मानना है कि जमाना सदैव सिर कटाने का ही रहता है।'

माननीय संघ प्रमुख श्री की इस बात को लेकर आप कह सकते हैं कि आज तो लोकतंत्र का जमाना है, बहुमत का जमाना है। इस जमाने में जिसके पास ज्यादा मत होते हैं वहीं राजा बनता है और मत जुटाने के लिए सिर कटाने नहीं गिनाने ही पड़ते हैं इसीलिए जमाना तो सिर गिनाने का ही है। आपकी बात आंशिक सत्य भी हो सकती है क्यों कि आज की व्यवस्था की वास्तविकता यही है कि जो ज्यादा सिर अपने पक्ष में गिनवाता है वहीं शासक बनता है। लेकिन क्या शासक बनना ही पर्याप्त है? इस प्रश्न का उत्तर भी सामान्यतः यही आएगा कि शासक बनने के लिए ही तो सब प्रयत्न किए जा रहे हैं तो वास्तविकता भी यही है कि सब प्रयत्न शासक बनने के लिए ही किए जा रहे हैं। आज यदि भारत में कोई ऐसा पद है जिसके लिए किसी भी प्रकार की योग्यता की अनिवार्यता नहीं है तो वह शासक का ही पद होता है। इसीलिए यहां जिसकी स्वयं की पढ़ाई का कोई ठिकाना नहीं होता उसे शिक्षा मंत्री बना दिया जाता है। जिसकी पीढ़ियों में कोई सैनिक नहीं रहा उसे रक्षा मंत्री बना दिया जाता है। जिसके पास खेती करने का अनुभव हो उसे उद्योग मंत्री बनाया जा सकता है और उद्योगपति कृषिमंत्री बन सकता है। आज शासक बनने के लिए शासक बनने की योग्यता या अनुभव की नहीं बल्कि बहुमत की आवश्यकता होती है और इसीलिए हम कहते है कि आज सिर कटाने की नहीं सिर गिनाने की आवश्यकता है। लेकिन शासक बनने से अधिक शासन चलाना महत्वपूर्ण होता है। शासन चलाने के लिए जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण योग्यता है वह सिर कटाने की ही है। सिर कटाने के अर्थ केवल युद्ध में काम आना ही नहीं होता। सिर कटाने का अर्थ अपने आपको मारने के लिए तैयार रहना होता है और उससे भी अधिक स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो अपने आपको मारना होता है। एक अच्छा शासक बनने के लिए प्राथमिक आवश्यकता होती है अपने आपको मारना। अपने आपको मारने वाले को अपने अहंकार को मारना होता है, अपनी भोग की वृत्ति को मारना पड़ता है। वित्तेषण को मारना पड़ता है, लोकेषणा को भी मारना पड़ता है। इतिहास में अमर होने की चाह को भी मारना पड़ता है। एक श्रेष्ठ शासक इस बात की चिंता नहीं करता कि संसार उसके बारे में क्या सोचेगा बल्कि वह यह चिंता करता है कि तत्कालिक परिस्थितियों में उसके कर्तव्य की मांग क्या है? भारत में जितने भी महान शासक हुए हैं, उनकी महानता के पीछे इस सभी ऐषणाओं का विसर्जन छिपा है और ऐषणा का विसर्जन ही अपने आपको मारना होता है। इसीलिए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि आज भी सिर गिनाने की नहीं बल्कि कटाने की आवश्यकता है। दुर्भाग्य से अवसर की समानता का अर्थ केवल शासक बनने के अवसर की समानता को ही अधिक माना गया है। इसीलिए आज यही क्षेत्र सर्वाधिक खुला क्षेत्र है। आप डॉक्टर बनें, इंजीनियर बनें, शिक्षक बनें, अधिकारी बनें, यहां तक की फिटर, इलेक्ट्रीशियन बनने के लिए भी कुछ विशिष्ट योग्यताओं का होना आवश्यक है, इन सबको कोई काम देने से पहले यह देखा जाता है कि ये दिया हुआ काम भली प्रकार कर पाएंगे या नहीं लेकिन शासक बनने के लिए बस इतना ही पर्याप्त है कि वह शासक बन जाए और बनने के लिए सिर गिनाने पड़ते हैं, जो अपने पक्ष में अधिक सिर गिनवा लेगा वह शासक बन जाता है। बनने के बाद उसमें अपने आप को मारने की योग्यता है या नहीं यह महत्वपूर्ण नहीं माना जाता। वास्तव में अवसर की समानता का नारा देकर शासन को मात्र भोग की वस्तु बना दिया गया है। जैसे किसी वस्तु को भोगने के लिए समान अधिकारों की मांग की जाती है वैसे ही शासन करने के अधिकारों के बंटवारे की अवधारणा मूल हो गई है। वास्तव में तो शासन करना अधिकार नहीं कर्तव्य होता है लेकिन वर्तमान में यह अधिकार बन गया है इसीलिए तो शासन में आने वाला व्यक्ति अपनी उस स्थिति का अधिकतम लाभ देने की प्रवृत्ति का शिकार होता है। जितना लूट सके उतना लूटने का प्रयास किया जाता है। वर्तमान में शासनरूढ होने वाले वर्ग के ऐसी अनेक करतूतों के उदाहरण दिए जा सकते हैं जब वे शासन में आते ही बंदरबांट प्रारंभ कर देते हैं और अपने पक्ष के अधिकतम लोगों को लूटने का प्रमाण-पत्र देने का उपक्रम करते हैं क्योंकि वे जिनकी सहायता लेकर अपने पक्ष में अधिक सिर गिनाने में सफल हुए हैं उनको उपकृत करना अपना कर्तव्य समझते हैं। इस प्रकार आज शासन इस प्रकार के अपवित्र गठबंधनों का शिकार बन गया है और इसीलिए राष्ट्र और राष्ट्रीयता पर विभिन्न वाद, पार्टियां एवं व्यक्ति प्राथमिकता पा गए हैं। यही कारण है कि माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि उनका मानना है कि आज भी सिर गिनाने नहीं सिर कटाने वाले लोगों की आवश्यकता है और आज ही नहीं बल्कि सदैव से ही शासक को सिर कटाने वाला ही होना चाहिए, अपने आपको मारने को तत्पर रहने वाला होना चाहिए तब ही राम राज्य स्थापित हो सकता है। युधिष्ठर का शासन स्थापित हो सकता है। सिर कटाने की क्षमता नहीं रखने वाले रंतिदेव नहीं बन सकते, मांधाता भी नहीं बन सकते। वे प्रताप भी नहीं बन सकते तो चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य भी नहीं बन सकते। उनकी भृतहरी या विक्रमादित्य बनने की संभावना भी शुन्य ही है। इसीलिए यदि हमें श्रेष्ठ शासन चाहिए तो शासन को भोग का अवसर नहीं बल्कि कर्तव्य का अवसर बनाना पड़ेगा और कर्तव्य के लिए मरने को तत्पर लोगों को तैयार करना पड़ेगा।

खरी-खरी

नागरिकता कानून के बहाने

आजकल देश में राजनीतिज्ञों के अनुकूल वातावरण बना हुआ। वर्षों बाद राजनीतिक नेताओं को देश के नहीं बल्कि पंथ विशेष के नेता बनने का अवसर मिला है। अंग्रेजों ने हमें बांटकर हमारे पर 200 वर्षों तक शासन किया और अंग्रेजों के जाने के बाद देश में पनपा राजनीतिक नेतृत्व भी उन्हीं के पदचिह्नों पर चलता हुआ बांटकर शासन करता रहा। लोकतंत्र सैद्धान्तिक रूप से बहुत अच्छी शासन प्रणाली है लेकिन व्यवहार में इसे अपने आपको जीवित रखने के लिए धड़ेबंदी का हलाहल विष तैयार करना पड़ता है। इस प्रकार जहां संसार में जीवित रहने के लिए अमृत का आह्वान किया जाता है वहीं लोकतंत्र का जीवन बंटवारे के विष पर बचा रहता है। इस प्रकार लोकतंत्र के लिए धड़ेबंदी आवश्यक है और धड़ेबंदी बिना बंटवारे के संभव नहीं है। इसीलिए इस प्रणाली में बंटवारा राजनीतिज्ञों का प्रिय विषय होता है और वे अपनी-अपनी राजनीति को फलने फुलाने के लिए इस प्रकार के बंटवारे की बिसात बिछाते रहते हैं। नागरिकता कानून का समर्थन और विरोध इसी बिसात का अंग है। वर्षों से इस देश का हिन्दू समाज एक संगठित वोट बैंक नहीं बन पाया लेकिन पिछले कुछ वर्षों में राजनीतिज्ञों द्वारा लगातार उपेक्षा की शिकार होने के कारण वह लामबद्ध हुआ और उसी लामबद्धता के परिणाम स्वरूप हिन्दुओं के पक्ष की बात करने का दावा करने वाली भारतीय जनता पार्टी का उभार हुआ। भाजपा इस उभार को बरकरार रखने के लिए लगातार इस प्रकार के विषय उठाती रहती है जो हिन्दू समाज को उसकी उस उपेक्षा को याद दिलाते रहे। सोशल मीडिया पर इस पार्टी की आई.टी. सेल द्वारा इस बाबत निरन्तर चलने वाला आक्रमक अभियान इसका स्पष्ट उदाहरण है। विगत लोकसभा चुनावों में भाजपा इस उभार को बरकरार रखने में सफल रही इसीलिए पूर्ण बहुमत से भी अधिक सीटें जीतकर पुनः सत्तासीन हुई। वर्तमान विपक्षी दल जब सत्ता में थे तो अल्पसंख्यक समुदायों में सदैव बहुसंख्यकों का मिथ्या भय पैदाकर उन्हें लामबद्ध कर सत्ता में बने रहे। इस भय को मिथ्या इसलिए लिखा है कि भारत का चरित्र कभी इस प्रकार के भय का पोषक नहीं रहा है। लेकिन सत्ता की राजनीति करने वाले लोगों को तो भारत के चरित्र से अधिक अपनी सत्ता को बनाए रखने की चिंता थी इसीलिए उन्होंने भारत के चरित्र के विपरीत इस भय का पोषण किया और उस भय के बल पर शासन करने के लिए बहुसंख्यक वर्ग की उपेक्षा करते रहे। भाजपा ने विपक्ष में रहते इस उपेक्षा को भुनाया और विभिन्न प्रकार के वादे किए। इन्हीं वादों के बल पर उपेक्षित बहुसंख्यक वर्ग लामबद्ध होकर भाजपा के साथ आया और दो बार पूर्ण बहुमत दे चुका है। वर्तमान सरकार विपक्ष में रहते किए वादों को पूरा कर रही है और ऐसा करते समय अपनी इस फितरत को प्रकट अवश्य करती है कि वह बहुसंख्यक वर्ग की हितैषी है। दूसरी तरफ बहुसंख्यक वर्ग की भाजपा के पक्ष में हुई धड़ेबंदी से विपक्ष हतप्रभ है और इस कारण किंकर्तव्यविमूढ भी है। इस परिस्थितियों में वह अपने पराभाव की समस्या की जड़ तक जाने की अपेक्षा समस्या को बढ़ा रहा है। हाल ही में पारित नागरिक संशोधन कानून पक्ष और विपक्ष की इसी मनोदशा का प्रकटीकरण है। सरकार ने इसे इस रूप में पेश किया जैसे वह मुस्लिमों के अतिरिक्त शेष सभी वर्गों की हितैषी है। इस बिल की भाषा में विभिन्न उपासना पद्धतियों के नाम का उल्लेख करने की अपेक्षा पड़ौसी देशों के पीड़ित धार्मिक अल्पसंख्यक शब्द भी हो सकता था लेकिन शायद इससे इतना स्पष्ट सन्देश नहीं जाता जितना वे देना चाहते थे। सरकार कहती है कि यह धार्मिक आधार पर हुए भारत के बंटवारे के बाद पाकिस्तान और बांग्लादेश में रह गए गैर मुस्लिमों की सहायता के लिए है जिसका वचन तात्कालिक राजनीतिज्ञ नेतृत्व ने दिया था तो फिर इसमें अफगानिस्तान को क्यों जोड़ा गया? अफगानिस्तान तो 1947 में भारत से अलग नहीं हुआ था। ऐसे में लगता यही है कि सरकार ने अपने एक सही काम को अपनी राजनीतिक चालबाजी के चक्कर में बदनाम कर दिया और यह भी लगता है कि सरकार चाहती थी कि ऐसा हो क्योंकि संदेश जो देना था।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

हूण आक्रमण और भारतीय प्रतिरोध

स्कन्दगुप्त द्वारा परास्त हुए हूण लम्बे समय तक पुनः आक्रमण की सोच भी ना सके। परन्तु स्कन्दगुप्त की मृत्यु के बाद उसके कमजोर उत्तराधिकारियों के कारण गुप्त साम्राज्य को प्रबल आघात लगा, गुप्त साम्राज्य विखण्डित होने लगा। अनेक अधीनस्थ शासकों ने अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित कर ली और देश में राजनीतिक अस्थिरता का वातावरण बन गया। इन परिस्थितियों का लाभ उठाने के लिए हूणों ने पुनः भारत पर आक्रमण किया। इस दूसरे हूण आक्रमण का नेता 'तोरमाण' था। तोरमाण एक क्रूर विजेता था जिसके नेतृत्व में हूणों ने अल्पकाल में ही समस्त उत्तरी भारत और पूर्वी भारत के एक बड़े भाग पर अधिकार स्थापित कर लिया। तोरमाण का पुत्र और उत्तराधिकारी मिहिर कुल अत्यन्त क्रूर और अत्याचारी शासक था। उसने हजारों बौद्ध भिक्षुओं की हत्या करवाई उसके नेतृत्व में तक्षशिला, कौशाम्बी, नालन्दा, पाटिलपुत्र जैसे प्राचीन नगरों को, जो भारतीय संस्कृति के केन्द्र थे ध्वस्त किया गया, अनेकों पुस्तकालयों को जला दिया गया। इसका समकालीन गुप्त शासक नरसिंह गुप्त 'बालादित्य' था जो संभवतः स्कन्दगुप्त के बाद के गुप्त शासकों में सर्वाधिक योग्य शासक था। जब मिहिरकुल ने इसकी राजधानी पर आक्रमण किया तो नरसिंह गुप्त ने उसका बड़ी वीरता से सामना किया। इस युद्ध में मिहिर कुल परास्त हुआ और बन्दी बना लिया गया। मिहिरकुल द्वारा इसकी माता के समक्ष क्षमा याचना करने पर माता के कहने पर नरसिंह गुप्त ने मिहिरकुल को क्षमा दान देते हुए मुक्त किया। मिहिरकुल कश्मीर गया और वहां शरण प्राप्त की परन्तु कृत्घन मिहिरकुल कश्मीर के शासक की हत्या कर स्वयं शासक बन बैठा, शीघ्र ही उसने गांधार प्रदेश पर अधिकार कर लिया और अपनी सैन्य शक्ति को पुनः बढ़ा कर उत्तर भारत की ओर बढ़ा। इस बार मिहिर कुल का सामना मालवा के शासक यशोधर्मन से हुआ जो कि छठी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारतीय राजनीतिक गगन मंडल में एक नक्षत्र की भांति चमक बिखेर रहा था, वह संभवतः औलिकर वंश से संबंधित था। यशोधर्मन के बारे में इतिहास में अधिक जानकारी के स्रोत उपलब्ध नहीं हैं। यशोधर्मन की सैनिक उपलब्धियों के बारे में जानकारी उसके मन्दसौर के दो अभिलेखों से मिलती है। मन्दसौर प्रशस्ति उसे अनेक युद्धों का विजेता बताती है, उसका चित्रण उत्तर भारत के चक्रवर्ती शासक के रूप में करती है। मन्दसौर प्रशस्ति के अनुसार उसकी मिहिरकुल पर विजय उसकी महानतम उपलब्धि थी। यशोधर्मन द्वारा मिहिरकुल की पराजय के बाद हूणों की शक्ति क्रमशः विनिष्ट होती गई। यद्यपि उनके छुट-पुट आक्रमण होते गए परन्तु उनमें पहली जैसी शक्ति अथवा तीव्रता नहीं थी। 550 ई. के आसपास हूणों ने गंगा घाटी पर अधिकार का अन्तिम प्रयास किया परन्तु इस बार मौखरिनरेश ईशान वर्मा ने उन्हें बुरी तरह परास्त किया। इसके बाद अगली आधी शताब्दी तक हूण शक्ति भारत पर आक्रमण का साहस ना जुटा सकी। **(क्रमशः)**।

खुद को जांचें, wincompete से

wincompete एक ऑनलाईन वेबसाईट, ऐप (आई.ओ.एस. एण्ड्रॉईड) व ब्लॉग है जिसमें 1,00,000 से अधिक प्रश्नों का बैंक है। जिसमें IAS, RAS, JEE, NEET, RRB, SSC बैंक, नर्सिंग, पटवारी, REET कांस्टेबल आदि की भर्ती के लिए आयोजित होने वाली परीक्षाओं की तैयारी के ऑनलाईन टेस्ट दिए जा सकते है।

- इंजीनियरिंग J.E.E.मेन्स के लिए 10,000 से अधिक प्रश्न उपलब्ध हैं।
- मेडिकल NEET के लिए 15,000 से अधिक प्रश्न उपलब्ध हैं।
- सामान्य विज्ञान, मानसिक योग्यता, इंग्लिश, करंट अफेयर्स, इतिहास, भूगोल आदि विषयों के प्रश्न हिन्दी व अंग्रेजी दोनों ही माध्यमों में उपलब्ध हैं।

किसी भी विषय या परीक्षा के लिए तीन तरह के मॉडल टेस्ट उपलब्ध हैं।

- **ऑनलाईन एग्जाम :** प्रथम ऑनलाईन एग्जाम है इसमें किसी भी परीक्षा के लिए प्रश्न बैंक से रेन्डमली प्रश्न चयन होकर मॉडल टेस्ट के रूप विद्यार्थियों को मिलते हैं। जिन्हें वह मोबाईल या कम्प्यूटर में हल कर सकते हैं।
- **विषयानुसार टेस्ट :** इसमें विद्यार्थी किसी भी विषय के चुने हुए टापिक्स चयन कर सकते हैं एवं टेस्ट के प्रश्न केवल विद्यार्थियों के चुने हुए टापिक्स में से ही आएंगे।
- **टेस्ट सीरिज :** इसमें विद्यार्थियों को जिस ई मेल से वेबसाइट (wincompete.com/App Wincompete) में लॉगईन किया है। उसकी सूचना ई-मेल ID:wcompete@gmail.com पर भेजने से अधिकृत किए जा सकते हैं। उसके पश्चात् विद्यार्थी सभी प्रकार की टेस्ट सीरिज में भाग ले पाएंगे।
- यह समस्त टेस्ट वेबसाईट/एप टेस्ट तैयारी हेतु उपयोग के लिए पूरी तरह से निःशुल्क है एवं सभी क्षेत्रों के तथा सभी प्रकार के विद्यार्थियों को निःशुल्क कोचिंग व ऑनलाईन टेस्ट की सुविधा देने के लिए बनाए गए हैं।
- टेस्ट देने के बाद विद्यार्थी को तत्काल ही अपना परिणाम रेंक एवं सभी प्रश्नों के सही/गलत होने की जानकारी के साथ विस्तृत उत्तर भी प्राप्त हो जाते हैं।
- विद्यार्थी अपनी प्रोफाईल से अपने पिछले दिए गए सभी टेस्टों का रिकार्ड किसी भी समय देख सकते हैं।
- अच्छे प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों के नाम वेबसाईट के लीडर बोर्ड पर दर्शाए जाते हैं।
- कठिन प्रश्नों के विस्तृत उत्तर ब्लॉग सोशल मीडिया पर डिस्कस किए जा सकते हैं।

- प्रकाशसिंह भदरू, प्रादेशिक परिवहन अधिकारी, उदयपुर

प्रवेश चालू - सीधे दसवीं करें

- सरकारी ओपन बोर्ड से घर बैठे बिना टी.सी. (TC) किसी भी उम्र में आधार कार्ड से सीधे दसवीं करें। 10वीं पास सीधे 12वीं आर्ट्स, साईन्स या कॉमर्स में करें।
- स्कूल छोड़ चुके महिला एवं पुरुष के लिए आगे पढ़ने का सुनहरा अवसर।
- नर्सिंग, फार्मेसी करने के लिए साइन्स से 12वीं करने का अवसर।
- 5, 6, 7, 8, 9वीं फेल या पास सीधे दसवीं करें।

NIOS भारत सरकार का सरकारी ओपन बोर्ड

परीक्षा : सितम्बर, अक्टूबर 2020 में

आदर्श सीनियर सैकण्डरी स्कूल

सोलंकिया तला, शेरगढ़, जोधपुर,

सांगसिंह समन्वयक 9783202923, 8209091787

NIOS कोड 170347

IAS/ RAS

तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान

स्प्रिंग बोर्ड

Spring Board

Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur

website : www.springboardindia.org

अलख नयन

आई हॉस्पिटल

Super Specialized Eye Care Institute

विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं

मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण

कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग

डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि

'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर

0294-2490970, 71, 72, 9772204624

e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

तीन राज्य, ग्यारह दिन और बारह शिविर

(पृष्ठ एक से लगातार)

मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले के पिपलिया मंडी गांव में स्थित नेचुरल पब्लिक स्कूल में 22 से 25 दिसंबर की अवधि में एक बालिका शिविर आयोजित हुआ। यह मध्यप्रदेश में आयोजित होने वाला प्रथम बालिका शिविर रहा। शिविर में राजस्थान से गई 10 बालिकाओं सहित कुल 135 बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन करते हुए लक्ष्मी कंवर खारड़ा ने बालिकाओं से कहा कि संघ द्वारा दिया जाने वाला शिक्षण हमारे जीवन की अनमोल पूंजी है। धन से भौतिक वस्तुएं तो प्राप्त की जा सकती हैं परंतु संस्कार, गुण, चरित्र और जीवनमूल्य अनमोल हैं। इन्हें केवल साधना से ही जुटाया जा सकता है और वही साधना यहाँ की जा रही है। शिविर के दौरान वरिष्ठ स्वयंसेवक रामसिंह माडपुरा भी उपस्थित रहे। राजपूत समाज के अध्यक्ष महेन्द्र सिंह फतेहगढ़, दयालसिंह सेदरा, नरेन्द्र सिंह सोलंकी, कृष्णपाल सिंह, मानसिंह, सज्जनसिंह, जितेन्द्रसिंह सहित मल्हारगढ़ व

नैनवा रोड (बूंदी)

जिस अमृत तत्व को स्थापित कर रहा है, संसार का वातावरण उसे नष्ट करने का पूर्ण प्रयास करेगा। ऐसे में साधना द्वारा ही इस तत्व का रक्षण, पोषण और संवर्धन सम्भव हो सकेगा। आपका तप और संघर्ष ही संघ को आपके भीतर जीवित रख सकेगा। शिविर में अंगारी, देवरिया विजय, किशोरपुरा, हनुमंतिया, गैलाना आदि गांवों के 120 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त

चंचल घोड़ी

पिपलिया मंडी के समाजबंधुओं ने व्यवस्था में सहयोग किया। मध्यप्रदेश के ही नीमच जिले में महागढ़ गाँव में भी इसी अवधि में बालकों का एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर का संचालन संघ के केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि श्रेष्ठता की ओर बढ़ने के लिए साधना करनी पड़ती है। गीता में वर्णित निष्काम कर्मयोग की साधना ही वह संजीवनी है जो हमारे समाज में नवजीवन ला सकती है। संघ हमें उसी सामूहिक साधना में नियोजित कर रहा है। आप कौम की आशा हैं, समाज और राष्ट्र का भविष्य हैं अतः इस गम्भीर उत्तरदायित्व को समझकर इस सामूहिक साधना में पूर्ण निष्ठा से जुट जावें। शिविर में महागढ़, बरथुन, सेमली, इस्तमुरार आदि स्थानों के 80 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। मध्यप्रदेश के ही मंदसौर जिले के अंगारी गांव में भी 26 से 29 दिसंबर तक बालकों का एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। इस शिविर का संचालन भी केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा द्वारा किया गया। उन्होंने शिविरार्थियों को सचेत करते हुए कहा कि संघ आपके जीवन में

शिविरार्थियों से कहा कि स्वयं के निर्माण के बिना समाज का निर्माण नहीं हो सकता। इसीलिए संघ समाज के सुधार की नहीं स्वयं के सुधार की बात करता है। अवाणिया के समस्त ग्रामवासियों ने मिलकर व्यवस्था का जिम्मा सम्भाला। गुजरात के ही हालार प्रान्त के शीषाग गांव में भी इसी अवधि में बालिकाओं का एक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर का

सर्दी को नकारती बंधुत्व की गर्मी

किया। अंगारी सरपंच खुमाण सिंह तथा नाहर सिंह ने व्यवस्था का जिम्मा सम्भाला।

गुजरात में गोहिलवाड़ संभाग के भावनगर प्रांत के अवाणिया गांव में बालकों का प्रशिक्षण शिविर 21 से 23 सितंबर तक सम्पन्न हुआ। शिविर में अवाणिया, मोरचंद, शिवशक्ति, श्यामपरा, वल्लभीपुर, खड़सलिया, खदडपर आदि गाँवो के 200 से अधिक युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन प्रवीणसिंह धोलेरा ने किया। उन्होंने

महरोली

संचालन जागृति बा हरदासकाबास ने किया। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि संस्कारित और मर्यादित नारी ही सुदृढ़ परिवार और समाज का आधार होती है। आज के भौतिकवादी युग में जहाँ सभी तरफ प्राप्त करने की होड़ लगी है, वहीं संघ हमें त्याग और साधना का अनूठा मार्ग दिखा ही नहीं रहा, उस पर चलने का अभ्यास भी करवा रहा है। शिविर में लगभग 50 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा भी शिविर में उपस्थित रहे। गुजरात में ही भावनगर जिले की तलाजा तहसील के झाझमेर गांव में भी बालिकाओं का एक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। 28 से 30 दिसंबर की अवधि में सम्पन्न इस शिविर में झाझमेर, मधुवन, मोरचंद, थलसर, खड़सलिया, तलाजा, भावनगर आदि स्थानों की 160 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन उर्मिला बा पच्छेगाम ने किया। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि हम पर परमेश्वर की कृपा हुई है जिससे हमें इस भौतिकवादी युग में ऐसा अनूठा शिक्षण मिल रहा है। अधिकाधिक प्राप्त करने की होड़ वाले इस जमाने में त्याग और कर्त्तव्यपालन का यह अनूठा शिक्षण केवल श्री क्षत्रिय युवक संघ ही उपलब्ध करा रहा है। इसलिए अपने महत्त्व को पहचानें तथा इस दुर्लभ अवसर को व्यर्थ न जाने दें। शिविर में व्यवस्था का जिम्मा जयदीप सिंह कलसार तथा वाजा राठोड वाढेर क्षत्रिय समाज, झाझमेर के कार्यकताओं ने संभाला।

हाड़ौती क्षेत्र में बूंदी जिले में नैनवां रोड स्थित महर्षि श्रृंग छात्रावास में बालिकाओं का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। भाभा अमरकंवर की स्मृति में 25 से 28 दिसंबर तक सम्पन्न इस शिविर में बूंदी, कोटा, अजमेर, भीलवाड़ा, केकड़ी आदि स्थानों की 121 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। वरिष्ठ स्वयंसेवक दीपसिंह बैन्यांकाबास के निर्देशन में संतोष कंवर सिसरवादा ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि हमारी कौम की पहचान आज पश्चिम के भौतिकवाद की आंधी में नष्ट होती जा रही है। हमारी भाषा, पहनावा, संस्कृति को हम ही भूलते जा रहे हैं। इस सांस्कृतिक और नैतिक क्षरण को रोकने का कार्य इन शिविरों के माध्यम से श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। शिविर राजपूत सोशल वारियर्स संस्थान के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। संस्थान की अध्यक्षा चंद्रावती कंवर पिपल्या भी शिविर के दौरान उपस्थित रहीं। बूंदी जिले के ही लाखेरी गांव में भी बालकों का एक शिविर 28 से 31 दिसंबर तक आयोजित हुआ। महाराजा मूलसिंह डिग्री कॉलेज के प्रांगण में सम्पन्न इस शिविर का संचालन संभाग प्रमुख बृजराजसिंह खारड़ा ने किया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

(पृष्ठ छह का शेष)

तीन राज्य...

उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि हम राजपूत हैं किन्तु यहाँ हम क्षत्रिय बनने आये हैं। राजपूत लड़ना जानता है परंतु क्षत्रिय यह जानता है कि किससे लड़ना है। संघ हमें यही सीखा रहा है, हमारे शत्रुओं और मित्रों की पहचान करा रहा है। हमारे भीतर रहने वाला तमोगुण ही हमारा वास्तविक शत्रु है। संघ हमें इसी शत्रु से लड़ने का अभ्यास शाखा व शिविरों के माध्यम से करा रहा है। शिविर में बूंदी, कोटा, अजमेर, केकड़ी, उदयपुर स्थानों के युवा सम्मिलित हुए। यह शिविर भी सोशल वारियर्स संस्थान के तत्वावधान में बाबोसा मूल सिंह प्रतापगढ़ की स्मृति में सम्पन्न हुआ।

जैसलमेर संभाग के अंतर्गत रामगढ़ प्रान्त में भोजराजसिंह की ढाणी में एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 25 से 28 दिसंबर तक आयोजित हुआ। संघ के केन्द्रीय कार्यकारी महेन्द्र सिंह पांची ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों को कहा कि पूज्य तनसिंह जी की पीड़ा को समझना ही संघ को समझना है। समाज, राष्ट्र और मानवता को आज क्षत्रियत्व की सर्वाधिक आवश्यकता है। संघ इसी आवश्यकता की पूर्ति कर रहा है। ईश्वरीय कृपा से हमको इस कार्य में निमित्त बनने का अवसर प्राप्त हुआ है। व्यक्ति निर्माण से ही समाज व राष्ट्र का निर्माण होता है इसीलिए संघ शाखा व शिविरों के माध्यम से व्यक्ति निर्माण का कार्य कर रहा है। इस शिविर में रामगढ़, जोगा, पूनमनगर, खडेरो की ढाणी, नाचना, बाड़मेर, जोधपुर आदि स्थानों के लगभग 50 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। सुमेर सिंह तथा हरपालसिंह ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा सम्भाला। वरिष्ठ स्वयंसेवक मंगलसिंह धोलेरा तथा प्रांतप्रमुख पदमसिंह रामगढ़ भी शिविर में उपस्थित रहे। इसी प्रकार एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर श्री सलारेश्वर महादेव मंदिर प्रांगण पीठ (सीमलवाड़ा), जिला डूंगरपुर में 24 से 27 दिसंबर तक संपन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए भँवर सिंह बेमला ने कहा कि संघ पूज्य तनसिंह जी का मानस पुत्र है। उन्हीं की प्रेरणा से यह कार्य चल रहा है। पूज्य श्री का जीवन चरित्र ही संघ के विचारदर्शन और सिद्धांतों की जन्मभूमि है। संघ के स्वयंसेवकों के लिए रखे गए सभी आदर्शों को तनसिंह जी ने पहले अपने जीवन में उतारकर दिखाया। इसीलिए संघ में आचरण का अत्यधिक महत्त्व है। शिविर में पीठ, भाणा, सीमल, धोधरा, रास्ता, टामटिया राठौड़, धुन्धावाड़ा, चौतरा, गुवेड़, लाम्बापारडा, गेंहुवाड़ा, रामगढ, वरदा, ठाकुर की बार, कच्छेर, भीमपुर आदि गाँवो के 60 से अधिक युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर व्यवस्था में पीठ गांव के पुष्पेंद्र सिंह ,बृजेन्द्र सिंह, देवेन्द्र सिंह, शेलेंद्र सिंह, कुलदीप सिंह, हंसराज सिंह आदि समाजबंधुओं ने सहयोग किया। शिविर के अंतिम दिन स्नेहमिलन व स्नेहभोज का भी कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम को मनोहरसिंह, महिपाल सिंह बेडसा, जगपाल सिंह, बलवीर सिंह साकरसी, प्रवीण सिंह, तेजसिंह अमृतिया आदि ने संबोधित किया।

(पृष्ठ चार का शेष)

नागरिकता कानून...

दूसरी तरफ किंकर्तव्यविमूढता की स्थिति को प्राप्त विपक्ष एक सही काम का केवल इसीलिए विरोध कर रहा है कि उसकी एक विशेष उपासना पद्धति को मानने वाले लोगों के तुष्टिकरण की पुरानी आदत है। अपनी इस आदत से मजबूर विपक्ष दंगाईयों का समर्थन करने से भी नहीं हिचकिचा रहा है। विपक्षी पार्टियों के शासन वाले कतिपय राज्यों के मुख्यमंत्री तो अपनी पूर्व की घोषित नीति से पीछे खिसक कर केवल इसीलिए पीड़ित लोगों को नागरिकता देने के इस बिल को अपने राज्य में लागू न करने की असंवैधानिक बात कर रहे हैं क्यों कि इसे भाजपा ने लागू किया है। अपने लंबे राजनीतिक जीवन में संजीदा राजनेता की छवि बना चुके लोग भी बचकाना बयान देकर देश के माहौल को बिगाड़ने से नहीं हिचकिचा रहे तो सदा ही बचकाना बाते करने वाले नए नवेले नेताओं से तो अपेक्षा ही क्या की जाए? इस पूरे माहौल से यही स्पष्ट होता है कि भारत के वर्तमान राजनीतिज्ञों की खेप अभी तक अंग्रेजों की बांटकर राजनीति करने की नीति की ही संवाहक बनी हुई है क्योंकि उनकी राजनीति बंटवारे के हलाहल विष के बल पर ही जीवित रह सकती है। लेकिन हम तो अंग्रेजों की नीति के संवाहक नहीं हैं, जिस भारतीयता पर हम गर्व करते हैं वह तो उनकी संवाहक नहीं है तो आएं हमारी तरफ से भारतीयता के प्रसार में सहयोग अनवरत जारी रखें, परिणाम परमेश्वर के भरोसे छोड़कर।

संत सान्निध्य एवं आशीर्वाद

श्रद्धेय स्वामी जी पूज्य अड़गड़ानंदजी महाराज के मुम्बई प्रवास के दौरान 12 जनवरी को मुम्बई में निवासरत संघ के स्वयंसेवकों ने परिवार सहित स्वामीजी का सान्निध्य व आशीर्वाद प्राप्त किया एवं सत्संग का लाभ लिया।

(पृष्ठ दो का शेष)

संविधान...

सभी स्थानों पर फाउण्डेशन का परिचय प्रस्तुत किया गया एवं साथ ही विगत एक वर्ष में हुई गतिविधियों की जानकारी प्रतिवेदन के रूप में प्रस्तुत की गई। आगामी कार्ययोजना पर भी चर्चा की गई। द्वितीय स्थापना दिवस पर फाउण्डेशन का यु-ट्यूब चैनल भी प्रारम्भ किया गया जिसमें छोटे-छोटे वीडियो अपलोड कर संवैधानिक साधनों एवं सरकारी योजनाओं का प्रशिक्षण दिया जाएगा। साथ ही फाउण्डेशन के काम में सहयोगी बनने की चाह रखने वाले बंधुओं को सूचना संप्रेषण के लिए एक वाट्सएप नंबर भी जारी किया गया जिसका नम्बर 9828406070 है।

स्व. उम्मेदसिंह धौली की पुण्यतिथि

जौहर स्मृति संस्थान के पूर्व अध्यक्ष उम्मेदसिंह धौली की प्रथम पुण्यतिथि पर 30 दिसम्बर को चित्तौड़गढ़ स्थित जौहर भवन में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

श्रद्धांजलि सभा को संस्थान के अध्यक्ष तखतसिंह फाचर, सांसद सी.पी. जोशी, डॉ. लोकेन्द्रसिंह ज्ञानगढ़, डी.डी. सिंह राणावत, नवीना कंवर, नारायणसिंह चिकलाना, गोविन्दसिंह साण्डा, ईश्वरसिंह चन्द्रावत आदि ने संबोधित किया। सभी वक्ताओं ने जौहर मेले की भव्यता एवं उसे विश्व स्तरीय बनाने में श्री धौली के योगदान को याद किया। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में बताते हुए समाज सेवा के लिए किए गए उनके कार्यों का स्मरण किया गया। अनेक लोगों ने उनकी स्मृति में काव्यांजलि अर्पित की। संस्थान के उपाध्यक्ष शक्तिसिंह मुरलिया ने आभार प्रदर्शित किया एवं संयुक्त मंत्री कानसिंह ने संचालन किया।

भुरटिया बंधुओं को मातृशोक

श्रीमती जड़ाव कंवर

संघ के स्वयंसेवक प्रकाशसिंह भुरटिया एवं शैतानसिंह भुरटिया के माताजी एवं सुरजपालसिंह भुरटिया के दादीसा **श्रीमती जड़ाव कंवर** का 4 जनवरी को 83 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है एवं परमेश्वर से दिवगंत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है।

जयसिंह आकोरापादर को मातृशोक

श्रीमती हवा कंवर

जालोर जिले में संघ के स्वयंसेवक जयसिंह आकोरापादर की माताजी **श्रीमती हवा कंवर** का 1 जनवरी 2020 को देहावसान हो गया। परमेश्वर से उनकी आत्मा को शांति प्रदान करने की प्रार्थना एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना।

'पूज्य तनसिंह जी की जयंती पर सादर वंदन'

'हम भाग्य और भगवान की ओर टुकर-टुकर नहीं देखते। यदि वे स्वेच्छा से प्रसन्न नहीं होते, तो अनिच्छा से ही सही, हम उनकी प्रसन्नता ले आएंगे'

- पूज्य तनसिंह जी

सुप्त क्षात्र शक्ति में इस प्रकार के पुरुषार्थ की प्रेरणा फूंकने वाले **पूज्य तनसिंह जी** की **जयंती (25 जनवरी)** पर उनके चरणों में सादर वंदन एवं पथप्रेरक के सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं।

हीरसिंह राठौड़

NS POWER™

मोबाइल एसेसरीज

गंगासिंह पादरू

कोम्बो स्पेयर पार्ट्स, टूलकिट के होलसेल विक्रेता

दुकान नं. : 758-89, 3050, द्वितीय मंजिल, सिटी सेन्टर, मुम्बई-8

मोबाइल नं. 99677-68099, 80940-20167

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org